रात्रिक्लास 29-10-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

अभी मीठे2 बच्चे तो समझ गये हैं रूहानी बाप आत्माओं को, जैसे खुद है ज्ञान का सागर वैसे ही बच्चों को ज्ञान का सागर बना रहे हैं। आगे थे तुम भक्ति के सागर! अभी बने हो ज्ञान के सागर। भक्ति से उतरती कला ज्ञान से चढ़ती कला। सागर दोनो है। भक्ति वालों को भी अच्छा नशा रहता है। यहां तुमको नशा चढ़ता है ज्ञान का। आगे भक्ति का था। अभी ज्ञान का चढ़ता है। भक्ति का भी तुमको फुल नशा था। ज्ञान का भी तुमको फुल नशा है। तुम हरेक नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने को स्वदर्शनचक्रधारी समझते हो। बराबर हम ज्ञान के सागर भी थे और भक्ति के सागर भी थे। भक्ति के सागर होने से उतरते आये। ज्ञान से चढ़ते हैं। भक्ति कब शुरु हुई जब रावण राज्य हुआ। कहते भी हैं रावण राज्य है। बापू गांधी था तब भी कहते थे रामराज्य स्थापन करते हैं। अर्थात रावण राज्य था। परन्तु वह तो जिस्मानी बापू था। रामराज्य तो हुआ नहीं। रूहानी बापू तो एक ही है। गांधी यह नहीं जानते थे बाप को याद करने से पाप जलेंगे। यह बेहद का बापू अपने साथ योग सिखाते हैं। क्योंकि मुझे पतित-पावन कहते हैं तो पावन होने का योग सिखलाये तुमको पावन बनाते हैं। मनुष्य स्वदर न होकर न जाने तो नास्तिक कहा जाता है। अभी तुम बाप को भी जानते हो और बाप की रचना के आदि मध्य अन्त को भी जानते हो। हरेक को समझना है हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। और फिर आप समान भी बनाना है। गोया प्रजा बनाते हैं। बच्चों को अपनी राजाई और प्रजा बनानी है। गृहस्थ व्यवहार का कर्तव्य करते हुये। एक दो को यह रंग लगाना है पावन बनाना है। बच्चे समझते जावेंगे पावन दुनिया को स्वर्ग, पतित दुनिया को नर्क कहा जाता है। पुराने पत्ते तो देवी देवता धर्म के हैं उनकी बुधि में बैठेगा। बाकी जो देवी देवता धर्म के पत्ते न होंगे उनकी बुधि में बैठेगा ही नहीं। पाप कटेंगे उनकी जिनकी कल्प2 कटी है। यह धर्म की स्थापना कैसे वन्डरफुल है। और जो आते हैं धर्म स्थापक जिनको कहा जाता है वह कुछ करते थोड़ेही हैं। ताकत जो मिलती है वह धर्म स्थापना की वहां भी यहां से ताकत लेकर जाते हैं। फिर आते हैं धर्म स्थापन होता जाता। मेहनत नहीं करते। बाप सभी का विनाश करते हैं फिर लायक भी बनाते हैं। बाप को सभी से ताकत लेनीहै फिर जाकर अपने धर्म में सुख पाते हैं। बाप सर्वकी सदगति कर देते हैं। सभी का हिसाब किताब चुकुत हो जाता है। आकर धर्म स्थापन करते हैं। मेहनत सारी बाप ही करते हैं। सर्व की सदगति दाता है ना। इसलिये उनको सभी परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं। इनको कितनी मेहनत करनी पड़ती है। सभी धर्म स्थापक आकर मंत्र लेंगे। मन्मनाभव मध्याजीभव। दिन प्रति दिन तुम्हारे में जोहर भरता जावेगा। जितना याद की यात्रा में रहेंगे तो फिर गुण भी आवेंगे। याद की यात्रा में बहुत फायदा है। विघ्न भी इसमें पड़ते हैं। क्योंकि तुम पावन बनते हो। माया रावण पतित बनाती है। तो विघ्न डालती है। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। इस समय तक जो स्थापना हुई है हू बहू कल्प पहले भी हुई थी। भल मनुष्य विचारे शास्त्रों को पकड़ बैठे हैं। अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। वह भक्ति में फिर कितना नुकसान पाते हैं। बाप ने समझाया है तुम कितने साहुकार थे। स्वर्ग की महिमा है ना। बच्चे जानते हैं हम विश्व के मालिक थे। अभी यह शरीर छोड़ फिर हम विश्व के राजकुमार बनेंगे। कितनी बड़ी राजधानी स्थापन होती है। राजधानी सिर्फ बाप ही आकर स्थापन करते हैं। तो सभी को पुरुषार्थ करना है। उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करना है। स्प्रीचुअल नालेज अक्षर कहते हैं परन्तु दुनिया में सिवाय तुम बच्चों के कोई नहीं जानते हैं। बाप समझाते हैं भक्ति के मार्ग कितना कड़ा अज्ञान मार्ग है। ज्ञान से तुम्हारी सदगति होती है। अज्ञान को भक्ति कहा जाता है। आगे ऐसे नहीं समझते थे। अभी समझते हो ज्ञान से सदगति होती है। अज्ञान से नीचे गिरना, ज्ञान से ऊपर चढ़ना है। और फिर पवित्र भी बनना है। हरेक के पुरुषार्थ का भी साक्षात्कार होताहै। तुम्हारा नाम वाला हो जावेगा तो सभी तुमको देने लग पड़ेंगे। परन्तु तुम हो सराफ। ऐसा थोड़ेही लेंगे जो भर कर देना पड़े। बाबा भर कर देंगे तो फिर हमको कम पड़ जायेगी। यह तो सभी यहां मिट्टी में मिल जाना है किसके नाम न आना है। तुम बच्चे जानते हो नई दुनिया में सभी नईचीजें ही मिलेंगी। नई दुनिया को कहा जाता है स्वर्ग। वन्डर ऑफ

न्यू वर्ल्ड। बाकी सात वन्डर्स हैं पुरानी दुनिया के। वह सभी न रहेंगे। न चीज़ रहेंगी न देखने वाले ही रहेंगे। यह सभी नालेज बुध में होनीचाहए फादर शोज़ सन। स्थानी बाप सभीआत्माओं को सुनाते हैं। फिर वह दूसरे आत्माओं को सुनाते हैं। बच्चों को ही सर्विस करनी है तो बाबा यहां बैठ गये हैं। जरा भी ख्याल न होता है। चैक कराने का ख्याल भी नहीं होता है। दिल भी नहीं होता है। यहां तो बड़ा ही मजा है। यहां बहुत मदद मिलती है। सभी भूलना है। पिछाड़ी में कोई भी याद न आये। बाप देखते भी हैं परन्तु फिर भी भूलना पड़ता है। बच्चे कहते हैं बाबा हम आप को बहुत याद करते हैं। शिव बाबा कहते हैं याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। करते हो न करते हो सो तो तुम ही जानो। मेरे साथ सच कहे या झूठ कहे। नुकसान वा फायदा तुमको है। इस दादा को तो सभी भूलना है। शरीर छोड़कर जाना है। नाटक पूरा होता है। तुमको यहां कोई बाहर का गोरखधंधा नहीं। बाहर जाने से तो सभी याद आते हैं। धंधा आदि याद आवेगा। यहां तो बाप सभी को भूलाते हैं। याद पड़ी तो भी करेंगे क्या। यहां तो तुम आते ही हो रिफ्रेश होने। यहां तुम्हारा चार्ट अच्छा वृद्धि को पाता है। जितना बाप को याद करेंगे तो धकेंगे बच्चे नहीं। शरीर को भूलना है। अपने को आत्मा समझना है। एक तो बैटरी भरेगी और जमा होता जावेगा। एक दो को सावधानी देते चलो बाप को याद करो तो पाप कट जाये। यहां और कोई धंधा-धोरी आदि नहीं। बच्चे रिफ्रेश होने आते हैं। यहां से वहां जाने से जैसे गोरखधंधे में फंस जाते हैं। यहां तो बच्चों की उन्नति होती है। बैटरी भरती है। यह फायदा होता है। खुशी भी होती है। हम ईश्वरीय परिवार में बैठे हैं। आसुरी परिवार का कोई बात नहीं। तुम ही सभी हंस। बगुला कोई नहीं। इसलिये तुमको कशिश होती है। सम्मुख रहने से बैटरी अच्छी चार्ज होगी। बच्चों को खुशी भी होती है। बाहर में तो भिन्न-सम्बन्धी आदि का याद आता रहता है। यहां नहीं रहता है। हम सभी भाई भाई हैं। और भाई बहन हैं। क्रिमनल दृष्टि की बात ही नहीं। तुम बच्चों को डर है। थोड़ी भी खराब बलन=होगी तो नाम बदनाम हो जावेगा। यहां तो कोई बगुला है नहीं। यहां और वहां में बहुत फर्क है।

बाप के सम्मुख आने में बहुत फायदा होता है। बहुत हैं जिनको घमसान अच्छा नहीं लगता। संग तारे कुसंग बोरे। यहां तो कुसंग की बात ही नहीं। तुम ही मोती चुगने वाले। धारणा करने वाले। वह हैं किचड़-पट्टी वाले तो दिल हट जाती है। बहुत नुकसान कर देते हैं। यहां तो सभी हंस हैं। दूसरा कोई है नहीं। बाकी घर में तो सभी रहते हैं। एक हंस तो 10-12 बगुले होंगे। इसलिये मेहनत लगती है। बाप को याद करना है। जो विश्व की बादशाही देते हैं। उनको याद नहीं करेंगे। बाप तुमको बहुत साहुकार बनाते हैं। अपने लिये कुछ मेहनत करते हैं। अपनी कोई कामना नहीं है। इसलिये उनकी कशिश जास्ती होती है। फिर घर जाते हैं तो नशा गुम हो जाता है। जैसे भूल जाते हैं। यहां तो तुम हास्टल में बैठे हो। पढ़ते भी हो यहां। सभी कुछ यहां है। बाप गैरन्टी भी देते हैं एक बाप को ही याद करना है तो पाप कटने हैं। इसलिये बाबा कहते हैं डायरी रखो। कोई को दुःख तो नहीं दिया। अपनी जांच करनी है। सभी को सुख देना है। इसमें जितना फर्क पड़ता है उस अनुसार तुमको वरदान मिलता है। संगम युग के बाद स्वर्ग होगा। ओम।

रात्रिक्लास :-28-10-68:-

********** मूल बात है कि बाप की याद में बैठो। और स्वर्ग की बादशाही की खुशी में बैठे हो। गायन भी है अति ईन्द्रियसुखगोप-गोपियां से पूछो। गोप-गोपियां न सतयुग में न कलियुग में होती हैं। गोप-गोपियां हैं यहां। एक बाप के बच्चे। अनेक गोप-अनेक गोपियां हैं। यह है मीठा सम्बन्ध। गोपी वल्लभ के गोप गोपियां। मीठा अक्षर है ना। तो सारे विश्व को गोपिनीये बनाते हैं। बच्चे जानते हैं इस विश्व को बहुत सुन्दर बनाते हैं। तुम योगबल वाले वालीन्टर्स हो। अथवा महावीर हो। महावीर आदिदेव को कहते हैं। जो माया पर जीत पाते हैं उनको महावीर कहा जाता है। अपनी जांच करनी होती है। कहां माया वार तो नहीं करती है।---

28-10-68

विकारों के वस तो नहीं हैं। काम महाशत्रु सबसे जास्ती वार करता है। आधा कल्प का यह बिमारी है। आवनाशी वैद बाप कहते हैं यह बिमारी भी उथलेगी। बाकी तुम अचल स्थिरियम रहना। हनुमान का मिसाल है ना। 5 विकारों का तूफान आये परन्तु घबराना न है। मुंझना न चाहिए। आने का ही हैं। परीक्षा होती है। मजबूत ऐसा रहना है जो कोई भी विकर्म न हो। क्रिमनल आई न हो। बाप ज्ञान का तीसरानेत्र देते हैं ना। यह तो ज्ञान के नेत्र हैं उनको फेरना है। अर्थात अपन को आत्मा समझना है। औरों को भी आत्मा दिखाना है। हिंसा कुछ नहीं करनी है। यह सभी है शिव बाबा की बारात। तुम हो बच्चे। बाप आये हैं गुल गुल बनाकर साथ ले जाने। इसलिये शिव की बारात कहा जाता है। बच्चों को मालूम है हमको यहां इस सृष्टि पर रहना न है। पार्ट बजाना है। शिव बाबा को तो पैर है नहीं। वह तो है निराकार। यह तो ड्रामा का चक्र है।

जो भी ब्राहमण है वह तो रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जान गये हैं। धणीके हो गये हैं। लून पानी न होना इसमें ही बहुत मेहनत है। एक दो से विपरीत न बनना है। विपरीत बुधि विनश्यन्ति। अच्छे अच्छे महारथी भी ऐसे होते हैं। नानक ने भी कहा है ना है भी सत्य, हो सी भी सत्य .... तो बच्चों को यह स्मृति रहनी चाहिए। हम आत्माएं 84 का पार्ट बजाती हैं। वन्डर है ना। वह तो सात वन्डर्स कहते हैं। बाप का तो एक ही वन्डर है स्वर्ग। उस स्वर्ग के तुम मालिक बनते हो। तो बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए। बाबा को रथ भी ब्रहमा का मिलता है। ब्रहमा द्वारा स्थापना। ब्राहमण बन देवता बनते हैं। तो विष्णु के माला बन जाते हैं। तो यह है ज्ञान मार्ग वह है भक्ति मार्ग। ज्ञान दिन भक्ति रात। सुख ही सुख। फिर भक्ति है दुःख। पुकारते हैं ना तुम मात पिता हम बालक तेरे। सुस्वर्ग में सुख घनेरे थे। अभी है दुःख घनेरे। बाप रास्ता बताते हैं तो याद करना चाहिए ना। स्व को सृष्टि चक्र के आदि मध्य अन्त की नालेज हुई। गदा तो है ही रावण को मारने की। यहां तुम बच्चों को सारा चक्र स्मृति में आता है। वेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। यह याद रहे तो भी विकर्म विनाश हो। कोई तकलीफ की बात ही नहीं। पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध बड़ी? पुरुषार्थ से प्रारब्ध बनती है। पुरुषार्थ जरूर करना पड़ता है। पुरु० बिगर कोई रह नहीं सकता। बाप को मनुष्य को देवता बनाते हैं। ऐसे मीठे2 बाप को बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। घड़ी2 बाप की याद थिरक जाती है। माया का काम है भूलाना। कोई न कोई विकर्म हो जाता है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

:*: बाप कहते हैं भाई बहन कीवा बहन बहनों में विपरीत बुधि न होनी चाहिए। एक दो के साथ थोड़ी भी विपरीत बुधि है तो देहअभिमानी बन पड़ते हैं। तुम पुरुषार्थी हो ना। महारथी घोड़ेसवार प्यादे गये जाते हैं। विपरीत बुधि होने से देहअभिमान हो जाता है। तुम कहते हो हम अपने को दाने से जानें। श्रीनाथ दी एवर सेकण्ड .... आते हैं। परन्तु इसमें मेहनत चाहिए। जरा भी बेईज्जती न हो। इसको कहेंगे पास विथ आनर। कितना बड़ा स्कूल है। आठ रत्न गले में पहनते हैं। कबभी 108की वस्तु नहीं बनाते हैं। यह तो डबलजवाहरी है ना। एक तो मुख से रत्न निकलते हैं। रूप और बसंत है ना। बाप ज्ञान का सागर है तो तुम्हारे परभी ज्ञान का बरसा करते हैं। तुम बच्चे क्या से क्या बन जाते हो। विकार तो कब ख्याल में भी न आना चाहिए। नफरत आनी चाहिए। वेहद का बाप कहते हैं पवित्र बनो। हम उनको भी नहीं मानते हैं? क्रिमनल आई को बदल सिव आई बनाना है। विकार का ख्याल भी न आये। भाई2 हैं तो क्रिमनल ख्याल भी नहीं। तुम खुद वारीयर्स हो। तुम्हारे में कमान्डर भी हैं मेजर्स भी हैं। कब भी कुबुधि न होनी चाहिए। कदम2 पर बाप से पूछ सकते हो। सबसे बुरा पाप है काम का। यह बड़ा शैतान है। आदिमध्यअन्त दुःख देते हैं। इस पर जीत पाने से ही जगतजीत बनेंगे। पावन बन सतयुग में जायेंगे। पावनसतयुग में पतित कलियुग में होते हैं। दोनो यहां हैं। पावन के आगे पतित माथा टेकते हैं। सच्चे महात्मा बच्चे हैं। सतयुग में 5विकार की किसको भीपतानहीं। रावणराज्य ही नहीं। तो ऐसा संकल्प की कैसे आवेगा। तुम बच्चे जानते हो यह चक्र फिरता रहता है। — - - - - - - -